अध्याय – 1

भाषा एवं उसके अंग

शब्द ज्ञान

संपर्क	माध्यम	रेफ	अर्द्धचंद्र	सार्थक
निरर्थक	संयोग	निश्चित	क्रम	इकाई

व्याख्या

यदि आपसे कहा जाए कि आपको घर में सभी आधुनिक सुविधाएँ दी जाएँगी, परंतु आपको घर में अकेले रहना होगा। आप किसी के साथ बातचीत नहीं कर सकते और न ही किसी के साथ खेल सकते हैं। सोचकर बताइए कि ऐसी स्थिति में आप कैसा अनुभव करेंगे?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे जीवन के हर क्षेत्र में अन्य लोगों से संपर्क बनाने की आवश्यकता पड़ती है और यह संपर्क वह भाषा के माध्यम से ही बनाता है।

परिभाषा

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भाव और विचार बोलकर या लिखकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तथा दूसरों के मन के भाव सुनकर या पढ़कर समझते हैं।

क्रियाकलाप

अपने मित्र को क्रम से संकेतों द्वारा कुछ निर्देश दीजिए तथा देखिए कि वह उन्हें समझकर कर पाने में सक्षम है या नहीं। जैसे :– अपनी ओर बुलाना, चॉकलेट खाने के लिए कहना आदि। इसी प्रकार अपने मित्र द्वारा दिए गए निर्देशों को भी करने की कोशिश कीजिए। क्रियाकलाप के आधार पर उदाहरण देते हुए बताइए कि क्या संकेतों द्वारा अपने भावों तथा विचारों को पूरी तरह प्रकट किया जा सकता है ?

_____

_____

_____

व्याख्या

अभी तक हमने जाना कि भाषा विचार व्यक्त करने का माध्यम है। संकेतों द्वारा हम अपने भाव पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकते। जिस प्रकार हमारे शरीर के विभिन्न अंग मिलकर एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार भाषा के विभिन्न अंग मिलकर सुंदर भाषा का निर्माण करते हैं। प्रस्तुत अध्याय में हम भाषा के अंगों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे, जो इस प्रकार हैं :–

क. वर्ण	न, च, ओ, इ, आ, ए
ख. शब्द	आओ, नीचे
ग. वाक्य	नीचे आओ।

1. वर्ण

आइए, सबसे पहले वर्ण के विषय में जानें। भाषा का उच्चारण ध्वनियों के माध्यम से होता है। इन ध्वनियों के लिए विशेष चिह्न निर्धारित किए गए हैं। ये निर्धारित चिह्न ही वर्ण कहलाते हैं।

परिभाषा

वर्ण वह छोटी–से–छोटी ध्वनि है, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।
जैसे :– अ, आ, क, ख आदि।

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

व्याख्या

समस्त वर्णों को एक साथ लिखने से वर्णमाला बनती है। आइए, हिंदी की पूरी वर्णमाला का अध्ययन एक बार फिर से कर लें।

अ	आ	इ	ई						
उ	ऊ	ऋ							
ए	ऐ	ओ	औ						
अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ		ड़	ढ़
		च	छ	ज	झ	ञ			
क्ष	त्र	ट	ठ	ड	ढ	ण		क्क	च्च
ज्ञ	श्र	त	थ	द	ध	न		द्द	ल्ल
		प	फ	ब	भ	म			
		य	र	ल	व				
		श	ष	स	ह				

स्वर

अयोगवाह

संयुक्त व्यंजन

व्यंजन

विशेष ध्वनियाँ

द्वित्व व्यंजन

पिछली कक्षाओं में आप स्वर तथा व्यंजन के बारे में विस्तारपूर्वक पढ़ चुके हैं। विशेष ध्वनियाँ, अयोगवाह, संयुक्त व्यंजन तथा द्वित्व व्यंजन से भी आप भली–भाँति परिचित हैं। आइए, अब 'रेफ' के प्रयोग तथा अर्द्धचंद्र के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

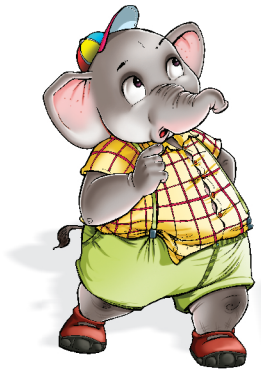

क. हिंदी भाषा में 'रेफ' का प्रयोग निम्नलिखित चार प्रकार से किया जाता है :–

1. जब 'र' किसी व्यंजन के बाद आता है (उच्चरित होता है), तो वह व्यंजन के नीचे इस प्रकार जुड़ता है, जैसे :– द्रव्य, प्रेरणा, ग्रामीण आदि।
2. जब 'र' स्वर के बिना, किसी व्यंजन से पहले हो तो 'र' व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है, जैसे :– आशीर्वाद, धर्म आदि।
3. 'ऋ' की मात्रा का उच्चारण भी 'र' की तरह ही होता है, जैसे :– कृपा, सृष्टि, दृष्टि आदि।
4. 'ट' व 'ड' के साथ 'र' का प्रयोग इस प्रकार होता है, जैसे :– ट्रक, ड्रम, राष्ट्र आदि।

ख. अंग्रेज़ी से आए शब्द जिनका उच्चारण करते हुए न तो पूरी तरह 'अ' का प्रयोग होता है और न पूरी तरह 'ओ' का प्रयोग होता है, ऐसे शब्दों के लिए अर्द्ध चंद्र 'ॅ' का प्रयोग किया जाता है, जैसे :–

कॉपी	Copy
कॉलम	Column
ऑक्सीजन	Oxygen
चॉक	Chalk

क्रियाकलाप

समूहों में बँटकर 'रेफ' से बने शब्दों की सूची बनाइए। इसके पश्चात् समूह एक से कोई एक सदस्य अपने समूह द्वारा बनाई गई सूची में से कोई एक शब्द बोले। समूह संख्या दो में से कोई एक सदस्य सुने गए शब्द में प्रयुक्त 'रेफ' का प्रकार तथा कारण बताए कि इसमें अमुक 'रेफ' का प्रकार ही क्यों प्रयोग किया गया है। इस प्रकार यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाए, जब तक सभी समूहों की बारी नहीं आ जाती। दिए गए स्थान में अपने समूह द्वारा पूछा गया शब्द तथा उसमें प्रयुक्त रेफ का प्रकार लिखिए।

शब्द _____ रेफ का प्रकार _____

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

2. शब्द

व्याख्या

आप वर्णों के बारे में भली–प्रकार जान चुके हैं। वर्णों के मेल से शब्दों का निर्माण होता है, किंतु वर्णों के प्रत्येक मेल को शब्द नहीं कहा जा सकता। जैसेः–लंगज, रकाप्र, णनिर्मा आदि। ये सभी शब्द निरर्थक हैं। जानते हैं क्यों ? क्योंकि इनका कोई अर्थ नहीं है।

परिभाषा

वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। जैसे :– जंगल, प्रकार, निर्माण आदि।

व्याख्या

प्रत्येक भाषा में शब्दों का विशेष महत्त्व होता है। विचारों को व्यक्त करने के लिए हम शब्दों का ही प्रयोग करते हैं। अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं ।

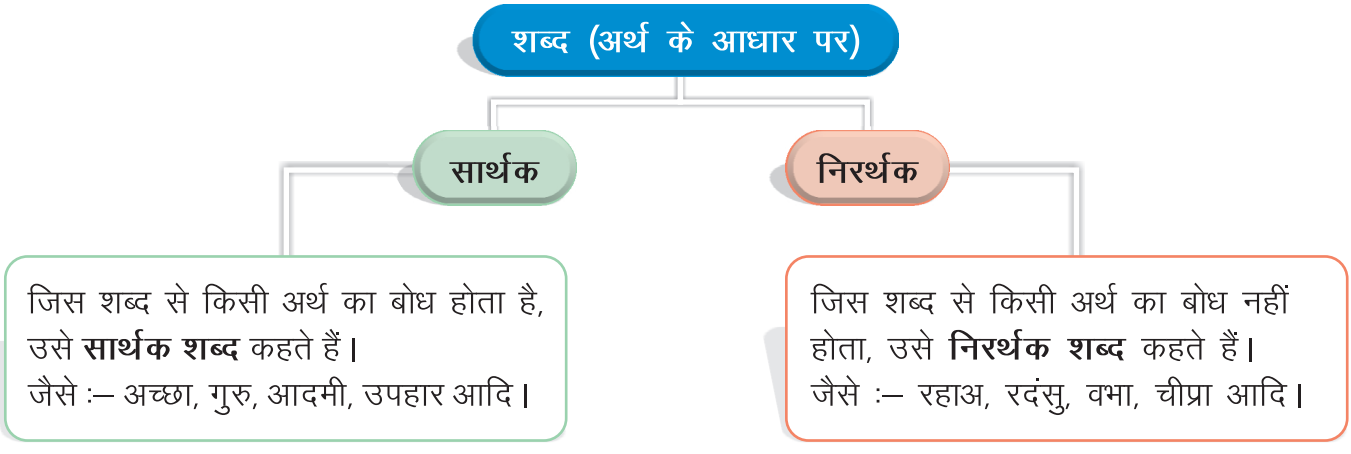

क्रियाकलाप

दो समूहों में बँटकर सार्थक शब्दों का प्रयोग करते हुए अंताक्षरी खेलिए। दिए गए स्थान में क्रियाकलाप के पश्चात् दोनों समूहों द्वारा प्राप्त किए गए कुल अंक भरिए।

समूह	कुल अंक

व्याख्या

जिस तरह विभिन्न वर्णों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है, उसी तरह विभिन्न शब्दों के योग से वाक्य बनते हैं। जब हम अपनी बात भाषा के द्वारा दूसरों तक पहुँचाते हैं, तो वाक्य का ही प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य देखिए :–

सिद्धान्त ने शौर्या को पुस्तक दी।
अमन ने क्रिकेट खेला।
चेतना दोपहर को घर लौटी।

आपने जाना कि सार्थक शब्दों को निश्चित क्रम में रखने से वाक्य बनता है। वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है। मन के भाव वाक्यों के द्वारा ही प्रकट किए जाते हैं। अतः भाषा में वाक्य को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

परिभाषा

शब्दों का वह सार्थक समूह जो पूरा भाव प्रकट करे, वाक्य कहलाता है।

जैसे :– नितिन खेल रहा है।

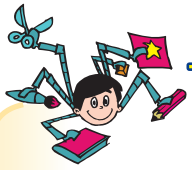

क्रियाकलाप

चित्र देखकर अपनी कल्पनाओं की उड़ान भरिए तथा अपने भावों और विचारों को अपने साथी–मित्रों के समक्ष व्यक्त कीजिए। इसके पश्चात् अपने भावों को आठ–दस वाक्यों में लिखित रूप में भी प्रस्तुत कीजिए।

 © एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

आइए, प्रस्तुत आरेख द्वारा भाषा के अंगों को एक बार पुनः दोहराया जाए :–

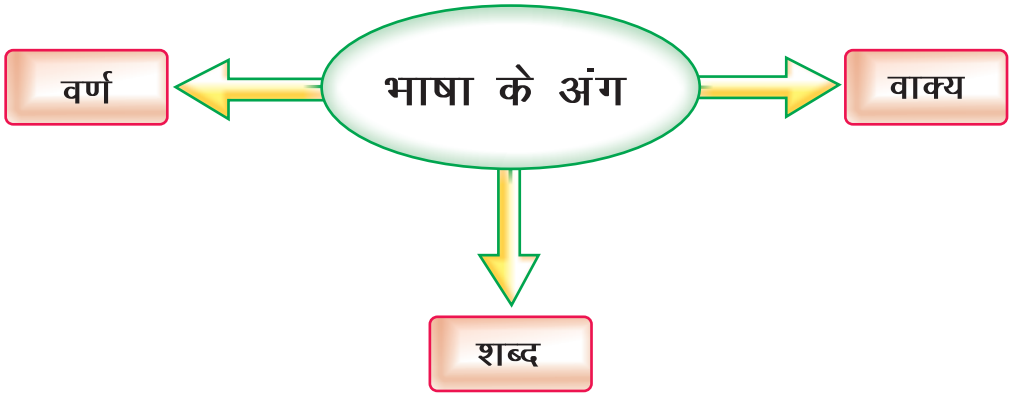

अभ्यास

1. भाषा का अर्थ बताकर उसका महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

2. वर्ण की परिभाषा लिखिए।

3. शब्द को परिभाषित करके उदाहरण के लिए कोई पाँच शब्द लिखिए।

4. निम्नलिखित तालिका में से सार्थक शब्द छाँटकर लिखिए।

लमक	कथा	दिवाला	बनावट	मब
विदाई	वंश	कतस्पु	चादर	परेसा

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

5. 'र' के विभिन्न रूपों से दो–दो शब्द बनाइए।

्र

ʿ

c

^

6. ऐसे दो शब्द लिखिए, जिनमें अद्र्धचंद्र का प्रयोग किया जाता है।

7. वाक्य की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

8. वाक्य शुद्ध कीजिए।

(क) सूरज खेल रही है।

(ख) माँ ने खाना बनाई है।

(ग) वे आ गया हैं।

(घ) उसका पत्र आई है।

अतिरिक्त अभ्यास

निम्नलिखित विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

"यदि मैं प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या होता/होती"

परियोजना

अंग्रेज़ी तथा किसी अन्य प्रादेशिक भाषा के आधार पर पता लगाइए कि क्या हिंदी की तरह अन्य भाषाओं के अंग भी वर्ण, शब्द और वाक्य ही हैं।

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

मेरा पृष्ठ

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया